अजनबी का प्रेम

बेगाने होते लोग देखे,
अजनबी होता शहर देखा,
अपनो को हंमने यहाँ
खुद से ही बेखबर देखा,
गैरों के हाथों में मरहम
अपनो के हाथ खंजर देखा,
मत पूछिए इस जिंदगी में
आँखों ने क्या क्या मंजर देखा,
इंसान को यहाँ हमने
बहुत ही करीब से रुसवा देखा,
कमजोर हुवे पक्षियों को
धीरे धीरे पँखों से उड़ते देखा,
जिस घोंसले को बनाया
वहाँ अपना शुकुन ढूँढते देखा,
झुकते थे हमारे कदमो में
उन्हें मुहँ छुपाकर जाते देखा,
कहते हैं रीत पुरानी है
पर हंमने इसे अभी अभी देखा,
शहंशाह थे जो शहर में
उनके अरमानों को उजड़ते देखा,
जमाने के इस उसूल को
रुखसत होते जनाजे में सोते देखा,
जो अपने थे जमाने मे
उनको आग जलाते हुवे देखा,

✍ गोपाल कृष्ण व्यास